प्राक्कथन

प्राचीन भारत में व्यापार एवं कर प्रणाली तथा उसका तत्कालीन समाज पर प्रभाव निमन स्रोतों के माध्यम से समझा जा सकता है। प्राचीन भारत में व्यापार एवं कर प्रणाली का सिलसिला लगभग 2500 ई0पू0 से जोड़ा जा सकता है। इस समय एक शहरी सभ्यता का उदय हुआ था जिसकी विशेषता थी कांस्य प्रौद्योगिकी का उपयोग साथ ही यह सभ्यता कृषक वर्ग के अतिरिक्त उत्पादन पर आधारित थी इसे कास्य युगीन संस्कृति कहने के पीछे तर्क यह है कि पत्थर के प्रचुर इस्तेमाल के बावजूद इस अवधि में कास्य तथा तांबे से बने औजार व्यापक रूप से प्रचलित थे।

तांबे अथवा कांसे के बने प्याले, कटोरे ओर तस्तरियां भारी संख्या में आम इस्तेमाल में थी। जहां तक हड़प्पा सभ्यता की बात है व्यापार के श्रोत में झुकाव जितना पश्चिम की ओर था उतना पूर्व की ओर नहीं इसका आधार यह है कि 2500 ई0 पूर्व से 1800 ई0पू0 के बीच विशेष रूप से 2400 ई0पू0 के बाद, कुछ हड़प्पाई मुहरें समुमेर या निम्न मेसोपाटामिया में मिली है 2400 और 21500 ई0पू0 के दौरान सुमेर तथा सिंधु घाटी के बीच व्यापार विशेष रूप से फल–फूल रहा था।

कर प्रथा का विकास प्राय सभी कालों में था जहां तक प्राचीन भारत का प्रश्न है उत्पादन के कारकों के साथ–साथ वितरण के तौर–तरीका में भी वर्तमान समय में परिवर्तन की प्रक्रिया दिखाई देती है।

इतने प्राचीन विचारों तथा तत्कालीन समाज को प्रभावित करने के लिये जिन लोगों ने हमें प्रेरित किया उनको हम नमन करते है।

इस शोध प्रबन्ध पर्यवेक्षण के गुरूतर दायित्व का निर्वहन डॉ0 नर्मदा प्रसाद मिश्रा ने जिस आत्मीय भाव से किया है उससे उनके अन्दर एक गुरू ही नहीं वरन् एक संरक्षक का रूप भी दिखायी पड़ता है। उनके प्रति औपचारिक आभार व्यक्त करने का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि उन्होंने इस शोध कार्य को पूर्व कराकर अपने कर्तव्य का ही निर्वहन किया है। हम उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते है।

हम अपनी माता श्रीमती ललिता सिंह के प्रति आभारी है जिनकी प्रेरणा, सहयोग व आशीर्वाद से इस शोध प्रबन्ध को पूर्णता प्रदान कर सके। हम अपनी पत्नी श्रीमती ममता सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने मेरे लिये एक स्वास्थ्यप्रद एवं शान्त घरेलू वातावरण प्रस्तुत करके मुझे सम्बल प्रदान किया।

"शारदा पुस्तक भवन" इलाहाबाद एवं ब्रिटिश लाइबेरी लखनऊ के अधिकारियों के प्रति हम अपना आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने समय–समय पर मुझे वांछित शोध सामग्री उपलब्ध कराकर मेरे शोध कार्य में सहायता पहुंचाई है।

इस शोध कार्य में प्रेरणा एवं सहयोग देने वाले समस्त प्रबुद्धजन के प्रति आभारी हूँ तथा यह कामना करता हूँ कि यह शोध प्रबन्ध वर्तमान व्यापार के मार्ग को प्रशस्त कर सके।

Vimlendu Singh

विमलेन्दु सिंह